Minhajul Aabideen Se 38 Madani Phool
(Qist : 1) (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 458
Weekly Booklet : 458

"मिन्हाजुल आ़बिदीन"

से 38 मदनी फूल (क़िस्त : 1)

सफ़ह़ात : 16

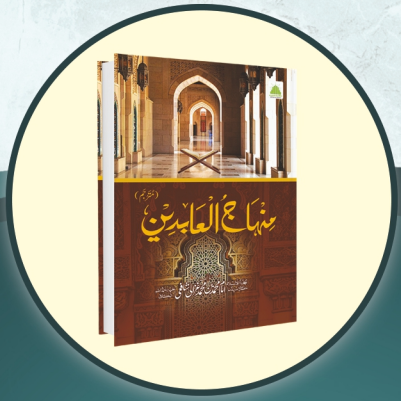

गुनाहों से बचने का नुस्ख़ा	04
दिल की सियाही की अ़लामत	07
इ़बादत में कैसे दिल लगे	09
शैत़ान को भगाने के दो त़रीक़े	14

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

किताब "मिन्हाजुल आ़बिदीन" से 38 मदनी फूल (क़िस्त : 1)[1]

दुआ़ए अ़त्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला "मिन्हाजुल आ़बिदीन से 38 मदनी फूल (क़िस्त : 1)" पढ़ या सुन ले उसे अपनी और अपने महबूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची महब्बत नसीब फ़रमा और उस को मां बाप समेत बे हिसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** "اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ" जो शख़्स यूं दुरूदे पाक पढ़े उस के लिए मेरी शफ़ाअ़त वाजिब हो जाती है। (معجم کبیر، 5/25، حدیث:4480)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾1﴿ जन्नत और जहन्नम

ह़दीसे पाक में है : اِنَّ الْجَنَّةَ حُفَّتْ بِالْمَكَارِهِ وَاِنَّ النَّارَ حُفَّتْ بِالشَّهَوَاتِ यानी जन्नत को तकालीफ़ से और जहन्नम को ख़्वाहिशात से ढांप दिया गया है।

(معجم کبیر، 9/104، حدیث:8546۔ منہاج العابدین، ص16)

मज़कूरा ह़दीसे पाक में इस बात का ज़िक्र है कि अल्लाह पाक ने दोज़ख़ को शहवात से ढांप दिया है यानी जहन्नम की त़रफ़ जाने वाला रास्ता ब ज़ाहिर बड़ा ख़ुशनुमा दिखाई देता है, इस राह पर चलना बड़ा आसान और इस से बचना निहायत दुश्वार है, इस राह में क़दम क़दम पर नफ़्स के लिए राह़तें हैं, इसी वजह से

1 ... येह रिसाला अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की किताब "मिन्हाजुल आ़बिदीन (उर्दू)" से तय्यार किया गया है।

नफ़्स भी इस राह पर चलने में रग़बत रखता है, लेकिन ब ज़ाहिर ख़ुशनुमा नज़र आने वाला येह रास्ता इन्सान को जहन्नम की त़रफ़ धकेल देता है। जिस त़रह़ दोज़ख़ शहवात से घिरी हुई है इसी त़रह़ बिहिश्त को भी अल्लाह पाक ने सख़्तियों और तकालीफ़ से ढांपा है, जन्नत ख़ुद बहुत ह़सीन लेकिन उस की त़रफ़ जाने वाली राह बहुत दुश्वार व कठिन है। मश्हूर मुफ़स्सिर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "दोज़ख़ ख़ुद ख़त़रनाक है मगर इस के रास्ते में बहुत से बनावटी फूल व बाग़ात हैं, दुनिया के गुनाह, बदकारियां जो ब ज़ाहिर बड़ी ख़ुशनुमा हैं येह दोज़ख़ का रास्ता ही तो हैं। जन्नत बड़ा बारदार (यानी फलदार) बाग़ है मगर इस का रास्ता ख़ारदार (यानी कांटेदार) है जिसे त़ै करना नफ़्स पर गिरां है। नमाज़, रोज़ा ह़ज, ज़कात, जिहाद, शहादत जन्नत का रास्ता ही तो हैं। त़ाआ़त पर हमेशगी, शहवत से अ़लाह़दगी वाक़ेई मशक़्क़त की चीज़ें हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 7/5)" (फ़ैज़ाने रियाज़ुस्सालिह़ीन, 2/191)

﴾2﴿ कामयाब लोग

ख़ुदा की क़सम ! येह (यानी जन्नत का) रास्ता बहुत दुश्वार और पुर ख़त़र है, इसी वजह से इस रास्ते पर चलने वाले बहुत थोड़े हैं मक़ूला है कि "اِذَاعَظُمَ الْمَطْلُوْبُ قَلَّ الْمُسَاعِدُ यानी जब मत़लबू बड़ा हो तो कोशिश करने वाले थोड़े होते हैं।" फिर उस रास्ते पर चलने वालों में से बहुत कम ही साबित क़दम रहते हैं और उन में से भी बहुत थोड़े मक़्सूद व मत़लूब तक रसाई पाने में कामयाब होते हैं, अस्ल में येही वोह मुअ़ज़्ज़ज़ीन होते हैं जिन्हें अल्लाह पाक ने अपनी मारिफ़त व मह़ब्बत के लिए मुन्तख़ब फ़रमाया और अपनी तौफ़ीक़ से उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाई फिर अपने फ़ज़्ल से उन्हें अपनी रिज़ा और जन्नत तक पहुंचाया। हम दुआ करते हैं कि अल्लाह पाक अपनी रह़मत से हमें और तुम्हें उन कामयाब लोगों में से कर दे। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 17) اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ واٰلہٖ وسلّم

﴾3﴿ इ़बादत से पहले तौबा

(जब बन्दा) इ़बादत में मश्ग़ूल होने लगे तो अपनी त़रफ़ नज़र करे कि मैं तो ख़त़ाओं और गुनाहों में लिथड़ा हुवा हूं। अक्सर लोगों का येही ह़ाल है पस ख़ुद से कहे : मैं इ़बादत की राह पर कैसे गामज़न हो सकता हूं ह़ालांकि मैं तो गुनाहों में लिथड़ा हुवा हूं और इस वक़्त भी उन पर डटा हुवा हूं लिहाज़ा ज़रूरी है कि पहले मैं गुनाहों से तौबा करूं ताकि अल्लाह पाक मेरी बख़्शिश फ़रमाए और मुझे गुनाहों की क़ैद से छुटकारा मिल जाए और मैं उन की पलीदी व गन्दगी से पाक साफ़ हो कर इ़बादत व क़ुर्बत के लाइक़ हो जाऊं। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 23)

﴾4﴿ नफ़्स को क़ाबू करने के लिए

(इ़बादत की राह में आने वाली रुकावटों को दूर करने के लिए जिन चार चीज़ों की ज़रूरत होती है : (1) दुनिया से किनारा कशी, (2) मख़्लूक़ से तन्हाई (3) शैत़ान से जंग और (4) नफ़्स की मुख़ालफ़त। उन में से) नफ़्स का मुआ़मला उन सब से ज़ियादा मुश्किल है क्यूंकि इस से अ़लाह़दगी नहीं हो सकती, न ही शैत़ान की त़रह़ उस पर इन्तिहाई सख़्ती कर के मुकम्मल त़ौर पर मग़लूब किया जा सकता है क्यूंकि येह इ़बादत की सुवारी और ज़रीआ़ है, बन्दा जिस इ़बादत का भी इरादा कर के उस की त़रफ़ मुतवज्जेह होना चाहे नफ़्स से उस की मुवाफ़क़त की उम्मीद नहीं की जा सकती क्यूंकि नेकी व भलाई की मुख़ालफ़त करना और ख़्वाहिश की पैरवी करना उस की फ़ित़रत में शामिल है, ऐसी सूरत में नफ़्स को तक़्वा की लगाम देना ज़रूरी है ताकि नफ़्स सरकशी व बग़ावत न करे और बन्दे का मुत़ीअ़ व फ़रमां बरदार रहे और बन्दा उसे नेक और अच्छे कामों में इस्तिमाल करे और हलाकत व फ़साद की जगहों से रोके, यूं उस घाटी को उ़बूर करने का सोचे और उस पर अल्लाह पाक से मदद चाहे। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 24)

﴾5﴿ गुनाहों से बचने का नुस्ख़ा

ख़ौफ़ येह है कि बन्दा अल्लाह पाक के तय्यार किए हुए दर्दनाक अ़ज़ाब और उस की जानिब से त़रह़ त़रह़ की सज़ाओं और रुस्वाई की वई़दों से डरे तो येह डर नफ़्स को गुनाहों से डराए और बाज़ रखेगा, पस यहां बन्दे को इ़बादत पर उभारने वाली चीज़ों के रास्ते का सामना होता है और उसे त़ै करने के लिए ख़ौफ़ व रजा (यानी उम्मीद) की ज़रूरत है लिहाज़ा बन्दा अल्लाह पाक की तौफ़ीक़ से उस रास्ते को त़ै करना शुरूअ़ कर दे। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 26)

﴾6﴿ इ़ल्म और अ़मल की मिसाल

इ़ल्म दरख़्त और इ़बादत फल की मानिन्द है, बुज़ुर्गी दरख़्त ही की है क्यूंकि वोह अस्ल है मगर इस (यानी दरख़्त) का नफ़ा उस के फल ही से मिलता है, इसी वजह से हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْعِلْمُ اِمَامُ الْعَمَلِ وَ الْعَمَلُ تَابِعُهٗ यानी इ़ल्म अ़मल का पेशवा और अ़मल उस का पैरोकार है।

(الترغیب والترہیب، 1/52، حدیث:8 بتغیر, मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 32)

﴾7﴿ इ़ल्मे दीन सीखना ज़रूरी है

कभी (तुम) ख़ालिस रियाकारी में पड़े होते हो और उसे अल्लाह पाक की ह़म्द और लोगों को भलाई की त़रफ़ बुलाना समझ लेते हो तो इस त़रह़ तुम गुनाहों को नेकियां और क़ाबिले गिरिफ़्त कामों को सवाबे अ़ज़ीम शुमार करने लगते हो पस तुम बड़े धोके और बुरी ग़फ़्लत में मुब्तला हो जाते हो। ख़ुदा की क़सम ! बग़ैर इ़ल्म अ़मल करने वालों के लिए येह बहुत बड़ी और बुरी मुसीबत है।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 36)

﴾8﴿ झगड़े से बचें

बह़सो मुबाह़सा और खींचा तानी से बचना तुम्हारे लिए ज़रूरी है क्यूंकि येह एक ऐसी बीमारी है जिस की कोई दवा नहीं लिहाज़ा इस से बचने में अपनी पूरी कोशिश लगा देना क्यूंकि जो भी इस बीमारी में मुब्तला हो जाए वोह कभी कामयाब नहीं होता सिवाए उस के जिसे अल्लाह पाक अपने फ़ज़्लो रह़मत और लुत्फ़ो करम से ढांप ले। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 41)

﴾9﴿ नजात का रास्ता

इ़ल्म की घाटी अगर्चे बहुत दुश्वार है मगर मक़्सूद व मत़लूब (यानी इ़बादत व नजात) तक रसाई का रास्ता येही है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 42)

﴾10﴿ इ़ल्म के मोह़ताज

ह़ुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मैं ने मेराज की रात जहन्नम में झांका तो उस में ज़ियादा तादाद फ़ुक़रा की देखी। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! माल के लिह़ाज़ से फ़क़ीर ? इरशाद फ़रमाया : नहीं, इ़ल्म के लिह़ाज़ से फ़क़ीर। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 44)

﴾11﴿ गुनाहों की नुहूसत

जो त़रह़ त़रह़ की गन्दगियों और ग़लाज़तों में लत पत हो वोह अल्लाह पाक से मुनाजात का क़ुर्ब कैसे पा सकता है ? यक़ीनन गुनाह पर डटे रहने वाले को नेक आमाल की तौफ़ीक़ कम ही मिलती है और इ़बादत के लिए उस के आ़ज़ा तय्यार नहीं होते। फिर अगर इ़बादत की तौफ़ीक़ मिल भी जाए तो बड़ी मशक़्क़त से अदा करता है जिस में लज़्ज़त व ह़लावत होती है न सफ़ाई व निखार और येह सब गुनाहों की नुहूसत और तौबा तर्क करने की वजह से होता है।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 47)

﴾12﴿ ख़ालिस तौबा नसीब होगी

जो सूरज की गर्मी, सिपाही का थप्पड़ और च्यूंटी का डंक बरदाश्त नहीं कर सकता वोह जहन्नम की आग की गर्मी, अ़ज़ाब वाले फ़रिश्तों की मार और बख़्ती ऊंटों की गर्दनों जैसे सांपों और ख़च्चरों जैसे बिच्छूओं का डसना कैसे बरदाश्त कर सकता है ? जो ग़ज़ब और हलाकत के मकान (यानी जहन्नम) में आग से पैदा किए गए हैं। हम बार बार ख़ुदा की नाराज़ी और अ़ज़ाब से उस की पनाह मांगते हैं। अगर तुम उन दहशतनाक उमूर को हमेशा याद रखो और सुब्ह़ शाम और रात की घड़ियों में उन की याद ताज़ा करते रहो तो अ़नक़रीब तुम्हें गुनाहों से ख़ालिस तौबा नसीब हो जाएगी। अल्लाह पाक अपने फ़ज़्ल से तौफ़ीक़ बख़्शे।

(मिन्हाजुल अ़ाबिदीन, स. 51)

﴾13﴿ हर गुनाह से बचना मुम्किन है

अगर तुम कहो कि इन्सान के लिए ऐसा होना कैसे मुम्किन है कि इस से कोई भी सग़ीरा या कबीरा (यानी छोटा या बड़ा) गुनाह ही न हो ? तो तुम्हें मालूम होना चाहिए कि ऐसा होना मुम्किन ही नहीं बल्कि आसान भी है और अल्लाह पाक अपनी रह़मत से जिसे चाहता है ख़ास फ़रमाता है।

(मिन्हाजुल अ़ाबिदीन, स. 53 मुल्तक़तन)

﴾14﴿ तौबा की बरकात

तौबा करने से तुम्हें दो बड़ी भलाइयों में से एक तो लाज़िमी नसीब होगी :

(1) सच्ची पक्की तौबा पर साबित क़दम रहने की तौफ़ीक़ मिल जाएगी या फिर

(2) गुज़श्ता गुनाह मुआ़फ़ हो जाएंगे। (मिन्हाजुल अ़ाबिदीन, स. 54)

﴾15﴿ सच्ची तौबा कितनी बड़ी सआ़दत है

ह़ज़रते सय्यिदुना उस्ताद अबू इस्ह़ाक़ इस्फ़राईनी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ बा अ़मल आ़लिम थे, वोह फ़रमाते हैं : मैं ने 30 साल तक अल्लाह पाक से दुआ़ की, कि वोह मुझे सच्ची पक्की तौबा की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। फिर मैं ने ख़ुद पर ह़ैरत व तअ़ज्जुब करते हुए कहा : سُبۡحَانَ اللّٰہ ! मैं 30 साल से अल्लाह पाक से एक ह़ाजत त़लब कर रहा हूं मगर वोह आज तक पूरी नहीं हुई। फिर मैं ने ख़्वाब में देखा कि एक कहने वाला मुझ से कह रहा है : तुझे इस बात पर तअ़ज्जुब हो रहा है ? तू जानता है कि अल्लाह पाक से क्या त़लब कर रहा है ? तू येह सुवाल कर रहा है कि अल्लाह पाक तुझे अपना मह़बूब व पसन्दीदा बन्दा बना ले। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 57)

﴾16﴿ गुनाह न करें अगर हो जाए तो फ़ौरन तौबा करें

तुम्हें शैत़ान और बलअ़म बिन बाऊ़रा का मुआ़मला (अल्लाह पाक का उन के बारे में छुपा फ़ैसला) भूलना नहीं चाहिए, उन के मुआ़मले की इब्तिदा गुनाह और इन्तिहा कुफ़्र पर हुई और दोनों हमेशा के लिए हलाक होने वालों के साथ हलाक हो गए। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 58)

﴾17﴿ दिल की सियाही की अ़लामत

दिल की सख़्ती से बे ख़ौफ़ मत होना और अपने ह़ाल पर ग़ौर करते रहना, एक बुज़ुर्ग رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ ने फ़रमाया : दिल गुनाहों की वजह से सियाह हो जाता है और दिल की सियाही की पहचान येह है कि तुम्हें गुनाहों से कोई घबराहट न हो, नेकियां करने का कोई मौक़अ़ न मिले और वाज़ो नसीह़त से कोई फ़ायदा न पहुंचे। ख़बरदार ! किसी गुनाह को छोटा मत जानो और कबीरा (यान बड़े) गुनाहों पर डटे हुए ख़ुद को तौबा करने वाला मत समझो। शाइ़र की इस बात पर ग़ौर करो :

اِنَّ الْقَلِيْلَ مِنَ الدَّوَامِ كَثِيْرٌ لَا تَحْقِرَنَّ مِنَ الذُّنُوْبِ اَقَلَّهَا

तर्जमा : थोड़े गुनाह को हरगिज़ मामूली न समझो क्यूंकि हमेशगी (यानी हमेशा गुनाह करते रहने) से "थोड़ा" ज़ियादा हो जाता है।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 59)

﴾18﴿ अल्लाह पाक के नेक बन्दों की शान

يَخَافُ عَلٰى نَفْسِهٖ مَنْ يَّتُوْبُ فَكَيْفَ تَرٰى حَالَ مَنْ لَّا يَتُوْبُ

तर्जमा : तौबा करने वाला अपने बारे में ख़ौफ़ज़दा है तो फिर तुम्हारे ख़याल में तौबा न करने वाले का ह़ाल कैसा होना चाहिए? (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 60)

﴾19﴿ ज़िन्दगी में एक बार ऐसे भी कीजिए

ग़ुस्ल करो, पाक साफ़ कपड़े पहनो और चार रकआ़त ऐसे पढ़ो जैसे पढ़ने का ह़क़ है, फिर अपने चेहरे को ज़मीन पर ऐसी जगह रख दो जहां तुम्हें अल्लाह पाक के सिवा कोई न देख रहा हो, फिर अपने सर पर मिट्टी डालो फिर तमाम आज़ा में सब से इ़ज़्ज़त वाले अपने चेहरे को ख़ाक आलूद करो। इस त़रह़ कि आंखों से आंसू जारी हों, दिल ग़म में डूबा हो, आवाज़ बुलन्द और पुकार आहिस्ता हो और जितना हो सके तुम एक एक गुनाह को याद करते हुए ख़ुद को मलामत (यानी शर्मिन्दा) करो और अपने नफ़्स को डांटते हुए कहो : ऐ नफ़्स ! तुझे शर्म नहीं आती ? क्या तू तौबा नहीं कर सकता ? क्या तुझ में अल्लाह पाक के अ़ज़ाब को सहने की त़ाक़त है ? क्या तू अल्लाह पाक को नाराज़ करना चाहता है ? यूंही करते करते रोते रहो फिर अपने रह़ीम रब की बारगाह में हाथों को फैला दो और अ़र्ज़ करो : इलाही ! तेरा भागा हुवा ग़ुलाम तेरे दर पर ह़ाज़िर है, तेरा ना फ़रमान बन्दा सुल्ह़ की त़रफ़ लौट आया है, तेरा गुनाहगार तुझ से माज़ेरत चाहता है। इलाही ! मुझे अपने करम से बख़्श दे और अपने फ़ज़्ल से मुझे क़बूल फ़रमा और मुझ पर अपनी नज़रे

रहमत फ़रमा, इलाही ! मेरे पिछले गुनाह मुआफ़ फ़रमा दे और आइन्दा ज़िन्दगी में गुनाहों से महफ़ूज़ फ़रमा, बेशक सारी भलाई तेरे हाथ में है और तू हम पर रहम फ़रमाने वाला मेहरबान है। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 61)

﴾20﴿ इबादत में कैसे दिल लगे

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : "बन्दा जब दुनिया से बे रग़बत होता है तो उस का दिल हिक्मत से मुनव्वर हो जाता है और आज़ा इबादत करने में उस के मददगार बन जाते हैं।" इस बात को पल्ले बांध लो।

(मिन्हाजुल आबिदीन, स. 65)

﴾21﴿ दोस्त का दुश्मन

दुनिया अल्लाह की दुश्मन है जब कि तुम अल्लाह से महब्बत करने वाले हो और जो किसी से महब्बत रखता है वोह उस के दुश्मन से नफ़रत रखता है।

(मिन्हाजुल आबिदीन, स. 69)

﴾22﴿ औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم की शान

जहां तक हलाल से बे रग़बती की बात है तो येह अबदालों (यानी औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہِم) का वस्फ़ है, वोह हलाल से भी ब क़दरे ज़रूरत ही लेते हैं जब कि हराम तो उन के नज़्दीक आग है उसे लेना तो दूर की बात उन के दिल में इस का ख़याल भी नहीं आता। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 69)

﴾23﴿ ज़रूरत से ज़ियादा हलाल इस्तिमाल करने की मिसाल

एक शख़्स ने तमाम लवाज़िमात का ख़ास ख़याल रखते हुए नफ़ीस और उम्दा हल्वा तय्यार किया मगर तय्यार करने के बाद उस में ज़हर का एक क़तरा डाल दिया, ज़हर डालते वक़्त एक शख़्स उसे देख रहा था और एक ऐसा था जिस ने

येह नहीं देखा था तो जब दोनों के सामने वोह बेहतरीन और उ़म्दा ह़ल्वा खाने के लिए रखा जाएगा तो जिसे ज़हर की मिलावट का इ़ल्म है वोह उस से बचेगा बल्कि उस के दिल में खाने का ख़याल तक नहीं आएगा और येह उस के नज़्दीक आग बल्कि उस से भी सख़्त होगा क्यूंकि वोह इस में मौजूद आफ़त को जानता है लिहाज़ा वोह इस की ज़ाहिरी उ़म्दगी से धोका नहीं खाएगा और उस के बरअ़क्स जिस ने ज़हर को देखा नहीं था वोह उस की ज़ाहिरी उ़म्दगी व सजावट से धोका खा कर उस के लिए ललचाएगा और उस से बचने वाले पर तअ़ज्जुब करेगा बल्कि उसे बे वुक़ूफ़ समझेगा येही ह़ाल दुनिया के ह़राम का भी है, बसीरत (यानी दिल की रौशन आंखों और) इस्तिक़ामत वाले इस से बचते हैं और बे ख़बर व ग़ाफ़िल इस का शौक़ रखते हैं।

यूंही दुनिया का ह़लाल उन अ़क़्लमन्दों के लिए उस ह़ल्वे की त़रह़ है जिस में बनाने वाले ने ज़हर तो नहीं डाला मगर थूक दिया या नाक डाल दी तो उस कार्रवाई को देखने वाला उस से कराहत करेगा, दूर हटेगा और सख़्त ज़रूरत के इ़लावा उसे इस्तिमाल नहीं करेगा और जिस ने इसे देखा नहीं उसे मालूम ही नहीं कि उस में क्या है वोह उस के ज़ाहिर को देख कर धोका खाएगा और उसे पसन्द करते हुए उस की लालच करेगा। तो येह दोनों अहले बसीरत व इस्तिक़ामत और अहले ग़फ़्लत व रग़बत के लिए दुनिया के ह़लाल की मिसाल है।

ग़ौर करो कि दोनों शख़्स ख़िल्क़त व त़बीअ़त में एक हैं मगर सिर्फ़ देखने की वजह से दोनों का ह़ाल मुख़्तलिफ़ हो गया, एक ने देखा और उसे इ़ल्म हो गया जब कि दूसरे ने नहीं देखा तो बे ख़बर रहा। अगर रग़बत रखने वाला भी बचने वाले की त़रह़ देख लेता और जान जाता तो वोह भी ज़रूर बचता और यूंही देखने वाला

अगर न देखता और न जानता तो रग़बत वाले की त़रह़ वोह भी ज़रूर रग़बत रखता। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 70)

﴾24﴿ जानने वालों का दुख

ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के दरवाज़े पर लिखा था : अल्लाह पाक उन्हें जज़ाए ख़ैर अ़त़ा फ़रमाए जो हमें नहीं जानते और ऐसी जज़ा वोह हमारे दोस्तों को अ़त़ा न फ़रमाए क्यूंकि हमें जो भी अज़िय्यत मिली दोस्तों ही से मिली। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 79)

﴾25﴿ उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम और अ़वाम से मेलजोल

लोग दीनी मुआ़मलात में जिस शख़्स के मोह़ताज हों ऐसे शख़्स को लोगों के साथ मेलजोल रखने के लिए दो चीज़ों की शदीद ज़रूरत होती है : (1) लम्बा सब्र, बहुत ज़ियादा बुर्दबारी, शफ़्क़त भरी नज़र और हमेशा अल्लाह पाक से मदद त़लब करना। (2) लोगों से इस त़रह़ अ़लाह़दगी कि सिर्फ़ जिस्मानी त़ौर पर उन के साथ रहे, अगर वोह उस से बात करें तो येह भी करे, अगर वोह मुलाक़ात को आएं तो उन के मरतबे के लिह़ाज़ से उन्हें इ़ज़्ज़त दे और शुक्रिया अदा करे, अगर वोह बात न करें और अ़लाह़दा रहें तो इसे भी उन की कोई परवा न हो, अगर लोग सच्चाई और भलाई पर हों तो येह उन की मदद करे और अगर वोह बुराई व बेहूदगी करें तो येह उन की मुख़ालफ़त करे और उन से अलग हो जाए, हां ! अगर उसे उम्मीद हो कि मेरी बात मान लेंगे तो उन्हें मना करे। साथ ही साथ लोगों के हुक़ूक़ मसलन उन से मुलाक़ात और उन की इ़यादत करे और अगर उस के पास कोई ह़ाजतमन्द आए तो अपनी त़ाक़त भर उस की ज़रूरत पूरी करे, यूंही अपने काम पर उन की त़रफ़ से किसी बदले की उम्मीद न रखे और उन के इस अ़मल को बे मुरव्वती या

लापरवाही न समझे बल्कि हो सके तो ख़ुद ख़र्च करे और लोग दें तो उन से न ले, लोगों की त़रफ़ से पहुंचने वाली तक्लीफ़ बरदाश्त करे बल्कि उन्हें ख़न्दा पेशानी से मिले, अपनी ज़रूरतें उन से पोशीदा रखे बल्कि उन का ह़ल ख़ुद तलाश करे और उन ज़रूरतों को पोशीदा त़ौर पर पूरा करे और नफ़्ली इ़बादत के लिए वक़्त निकाले। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 86)

﴾26﴿ फ़ारूक़े आ़ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का ख़ौफ़े ख़ुदा

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : अगर मैं रात को सोता हूं तो (रात इ़बादत में न गुज़ार कर) अपना नुक़्सान करता हूं और अगर दिन में सोता हूं तो रिआ़या (यानी क़ौम) का नुक़्सान करता हूं अब इन दो बातों के होते हुए मैं कैसे सो सकता हूं? (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 87)

﴾27﴿ बुज़ुर्गों की सीरत अपनाने के लिए

(1) अगर तुम बुज़ुर्गों की सीरत अपनाना चाहते हो तो अपने अन्दर मुसीबतें बरदाश्त करने की क़ुव्वत पैदा करो। (2) हर नापसन्दीदगी के वक़्त नफ़्स को बा वक़ार और दिल को ख़ूब सब्र करने वाला बनाओ। (3) ज़बान को क़ैद रखो और आंखों को लगाम दो। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 88)

﴾28﴿ अल्लाह वालों की सोह़बत की अहमियत

हर ह़ाल में अल्लाह वालों की सोह़बत इख़्तियार करना और तकालीफ़ पर सब्र करना ही बेहतर है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 96)

﴾29﴿ दोस्तों से मुलाक़ात की दो शराइ़त

ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से फ़रमाया : زُرْ غِبًّا تَزْدَدْ حُبًّا यानी कभी कभी मिला करो महब्बत में इज़ाफ़ा होगा।

(معجم کبیر، 4/21، حدیث: 3535, मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 96)

शर्ह़े ह़दीस : मिलने जुलने के मुआ़मले में दो त़रह़ के लोग होते हैं :

(1) वोह जिन से इन्सान का बरादराना और गहरा तआ़ल्लुक़ हो, आपस में इख़्लास और मह़ब्बत का रिश्ता क़ाइम हो, बार बार मुलाक़ात से उक्ताहट पैदा होने के बजाए एक दूसरे से उन्सियत पैदा होती हो, तो ऐसे दोस्त से रवाबित़ व तआ़ल्लुक़ की कसरत बाइ़से ख़ैर है।

(2) जहां मह़ब्बत गहरी न हो, बल्कि तकल्लुफ़ात का ह़िजाब ह़ाइल हो, दिलों में फ़ासिले और तह़फ़्फ़ुज़ात हों, तो ऐसे में अक्सर मुलाक़ात की कसरत से उक्ताहट पैदा होती है, लिहाज़ा ऐसे में समझदारी ज़रा फ़ासिला क़ाइम रखने में है : इस सूरत में गाहे गाहे (यानी कभी कभार) की मुलाक़ात इ़ज़्ज़त और आपसी मह़ब्बत को बह़ाल रखती है। (روضۃ العقلاء ونزہۃ الفضلاء، ص116 مفہوماً)

﴾30﴿ फ़ुज़ूल मुलाक़ातें करने का शौक़

लोगों से बेजा उन्सियत व मुलाक़ात रिज़्क़ में तंगी की अ़लामत है, जब तुम देखो कि तुम्हारा दिल ख़्वाह म ख़्वाह लोगों से मिलने और गुफ़्तगू करने को चाह रहा है तो समझ जाओ कि तुम्हारा फ़ारिग़ और बेकार रहना तुम्हें इस फ़ुज़ूल काम की त़रफ़ बुला रहा है। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 98)

﴾31﴿ मह़बूब के कलाम की लज़्ज़त

ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام जब अल्लाह पाक से बातें कर के वापस आए तो लोगों से दूर रहने लगे और अपनी उंगलियां अपने कानों में डाल लेते ताकि लोगों की बातें न सुनें और आप عَلَيْهِ السَّلَام लोगों की गुफ़्तगू से मुतनफ़्फ़िर होते और वह़शत मह़सूस फ़रमाते थे। लिहाज़ा तुम इस पर अ़मल करो जो हमारे शैख़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया है :

तर्जमा : (1) तुम लोगों से (बिला ज़रूरत) कनाराकश हो कर अल्लाह पाक की दोस्ती पर राज़ी रहो। (2) महब्बत में सच्चे रहो चाहे लोगों में मौजूद हो या ग़ाइब (3) जैसे चाहो लोगों की छान बीन करो तुम उन्हें बिच्छूओं की मानिन्द पाओगे। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 98)

﴾32﴿ काश ! नफ़्स व शैतान के ख़िलाफ़ जंग जारी रहे

हज़रते यहया बिन मुआज़ राज़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने सच ही फ़रमाया कि "शैतान फ़ारिग़ है और तुम मसरूफ़ हो, वोह तुम्हें देख रहा है जब कि तुम उसे नहीं देख सकते, तुम उसे भुला देते हो मगर वोह तुम्हें भूलने वाला नहीं और ख़ुद तेरी ज़ात में तेरे ही ख़िलाफ़ शैतान के बहुत से मददगार हैं।" लिहाज़ा शैतान से जंग करना और इस पर ग़ज़बनाक होना ज़रूरी है वरना तुम फ़साद व हलाकत से बे ख़ौफ़ नहीं हो सकते। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 101)

﴾33﴿ शैतान को भगाने के दो तरीक़े

अगर तुम सुवाल करो कि मैं किस चीज़ के साथ शैतान से जंग करूं और उसे कैसे दूर भगाऊं ? तो याद रखो कि सूफ़ियाए किराम (رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِمْ) के इस बारे में दो तरीक़े हैं :

पहला तरीक़ा : एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया कि शैतान को भगाने का येही तरीक़ा है कि अल्लाह की पनाह मांगते रहो, क्यूंकि शैतान एक कुत्ता है जिसे अल्लाह पाक ने तुम पर मुसल्लत किया है अगर तुम उस से जंग करने और उसे दूर भगाने में लग गए तो थक जाओगे और तुम्हारा वक़्त बरबाद हो जाएगा और येह कुत्ता तुम से जीत कर तुम्हें काटेगा और ज़ख़्मी कर देगा लिहाज़ा उस कुत्ते के मालिक (यानी अल्लाह पाक) की तरफ़ रुजूअ करना ही ज़ियादा बेहतर है ताकि वोह उसे तुम से दूर कर दे। **दूसरा तरीक़ा :** दीगर बुज़ुर्गों ने येह तरीक़ा बताया

है कि बन्दा मुजाहदा (यानी ख़ूब कोशिश) करे और शैतान की मुख़ालफ़त करने और दूर भगाने में डट जाए।

मैं कहता हूं (यानी इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :) मेरे नज़दीक बेहतरीन तरीक़ा येह है कि तुम दोनों तरीक़ों को जमा कर लो पहले शैतान के शर से पनाह मांगो जैसा कि हमें हुक्म दिया गया है, बेशक अल्लाह पाक उस के शर से पनाह देने को काफ़ी है, फिर अगर हम देखें कि वोह हम पर ग़ालिब आ रहा है तो समझ जाएं कि अल्लाह पाक ने हमें इस आज़माइश में मुब्तला फ़रमाया है ताकि अल्लाह पाक हमारी ख़ूब मेहनत और कोशिश की सच्चाई और हमारे सब्र का इम्तिहान ले। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 101)

34 नफ़्सानी ख़्वाहिशात के नुक़्सानात

तुम मख़्लूक़ में जो भी फ़ित्ना, गुमराही, गुनाह और ज़िल्लतो रुस्वाई देखोगे उस का सबब नफ़्स और उस की ख़्वाहिश ही नज़र आएगी। अगर येह नफ़्स न होता तो मख़्लूक़ सलामती और ख़ैर में ही रहती। जब येह दुश्मन (यानी नफ़्स) इस क़दर नुक़्सान पहुंचाने वाला है तो अ़क़्लमन्द पर लाज़िम है कि इस से बचाव का एहतिमाम करे। (मिन्हाजुल आबिदीन, स. 118)

35 नफ़्स के ज़ोर को तोड़ने वाली तीन चीज़ें

नफ़्स के ज़ोर को तोड़ने वाली तीन चीज़ें हैं : (1) अपने आप को ख़्वाहिशात से रोकना, क्यूंकि ज़िद्दी जानवर को जब चारा कम मिलता है तो वोह नर्म पड़ जाता है। (2) नफ़्स पर इ़बादात का बोझ डालना, क्यूंकि चारा कम देने के साथ साथ गधे पर बोझ भी बढ़ा दिया जाए तो वोह भी बेबस हो कर क़ाबू में आ जाता है। (3) अल्लाह पाक से मदद मांगना और उस की बारगाह में गिर्या व ज़ारी करना कि वोह तुम्हारी मदद करे क्यूंकि उस के सिवा कोई चारा नहीं।

(मिन्हाजुल आबिदीन, स. 119)

﴾36﴿ अल्लाह पाक से डरो जैसा डरने का ह़क़ है

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते मुजाहिद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने (اِتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ (پ4، اٰلِ عمرٰن:102) तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : "अल्लाह से डरो जैसा उस से डरने का ह़क़ है।" का माना यूं बयान) फ़रमाया : अल्लाह पाक की फ़रमां बरदारी की जाए ना फ़रमानी न की जाए और उस का ज़िक्र किया जाए भुलाया न जाए और उस का शुक्र अदा किया जाए नाशुक्री न की जाए। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 130)

﴾37﴿ निगाहों की ह़िफ़ाज़त

बन्दा कभी ऐसी नज़र डालता है जिस के सबब दिल ऐसा बिगड़ता है जैसे खाल बिगड़ जाती है, अब उस से कभी फ़ायदा नहीं उठाया जा सकता।

(मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 136)

﴾38﴿ शहवतों के लिए सब से अच्छी रुकावट

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुन्नून मिस्री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "शहवतों के लिए सब से अच्छी रुकावट निगाहें नीची रखना है।" (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 137)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आरास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पैम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मामूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पैम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दावत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

अगले हफ़्ते का रिसाला

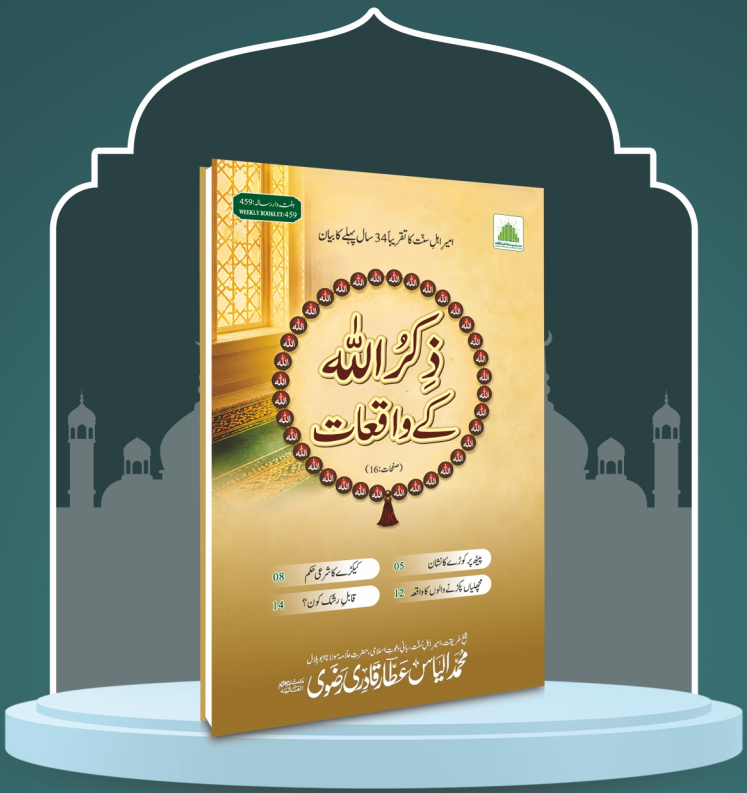

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025